IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, January 2024

पुस्तकालय में कम्प्यूटर की उपयोगिता : छात्र और संदर्भ सेवा के संदर्भ में

डॉ. राजकुमार कुशवाहा[1] एंव डॉ. जेंदलाल सिंह[2]
पुस्तकालयध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष
शासकीय महाविद्यालय, रामपुर नैकिन, सीधी, म.प्र[1]
शासकीय महाविद्यालय, सिहावल, सीधी, म.प्र.[2]

सारांश :–

आज पुस्तकालय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अहम भूमिका अदा करते हुए सूचना क्रान्ति का प्रमुख केन्द्र हो चुका है। बदलते हुए समय के साथ जहाँ पुस्तकालय का विस्तार हुआ है, वहीं अनेक कई चुनौतियां का भी सामना इसे करना पड़ रहा है। अतः आवश्यक है कि समय की आवश्यकता और मांग के अनुसार इस क्षेत्र में नवीनतम शोध और अन्वेषण किये जाय। पुस्तकालय में प्रदान की जाने वाली सेवाओं में संदर्भ सेवा का महत्वपूर्ण स्थान है। बदलते हुए परिवेश में पुस्तकालय के सन्दर्भ में संदर्भ सेवा आवश्यक है। पुस्तकालय के संदर्भ में पाठक और पुस्तक में सम्पर्क स्थापित करने हेतु की जाने वाली सेवा ही संदर्भ सेवा है। सन्दर्भ सेवा वास्तव में व्यक्तिगत सेवा द्वारा पाठक और पुस्तक दोनों में सम्पर्क स्थापित करने की प्रक्रिया हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि संदर्भ सेवा प्रत्येक पाठक को प्रश्नों के हल ढूढने के लिए सहायक ग्रन्थ ढूँढ़ने में दी गई व्यक्तिगत सेवा है। इस दृष्टि से आवश्यक है कि यह सेवा पूर्णतः और तत्परता के साथ दी जाये।

जब तब पाठक को इन प्रविधियों का ज्ञान नहीं होगा तब तक वह सही ढंग से पुस्तकालय का उपयोग करने में सक्षम नहीं होगा। इसे चलाने के लिए अनेक प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। स्पष्ट है कि बिना तकनीकी जानकारी के अर्थात सन्दर्भ सेवा की कोई भी पुस्तकालय वांछित उद्देश्य की प्राप्ति नहीं कर सकता। जहॉ पूर्व में केवल पुस्तकालय पुस्तकों का संग्रह और उनकी सुरक्षा पर ही विशेष बल दिया जाता था वहॉ 19वीं शताब्दी से बदलते हुए परिवेश व आवश्यकता को ध्यान में रख कर संग्रहित ग्रंथों का व उनकी उपयोगिता पर विशेष बल दिया जाने लगा। इसलिए पुस्तकालय का अधिक से अधिक उपयोग हो सके इसलिए पुस्तकालय विज्ञान के न केवल अनेक सिद्धान्तों का विकास हुआ वरन् इसके अनेक विधियॉ लागू की गई है। यह सर्व विदित है कि वर्तमान का पाठक पुस्तकालयों से केवल पुस्तक या अन्य साहित्य ही नहीं चाहता बल्कि वह यह भी चाहता है कि उसकी समस्या का समाधान किस पुस्तक के अवलोकन से शीघ्र प्राप्त हो सकता है। इसलिए उसकी विशेष रूचि इस बात में है कि पुस्तकालय में उपलब्ध समस्त साधन और आधुनिक प्रविधियों का लाभ उसे मिल सके।

संदर्भ सूची

[1]. ई–बुक क्या है, eprakashak.com/what_is_ebook_html
[2]. त्रिवेदी डॉ. आर.एन. एवं शुक्ला, डी.पी. (2000) रिसर्च मैथ्डोलॉजी, कालेज बुक डिपों, जयपुर
[3]. मिश्रा, लक्ष्मी (1982), मध्यप्रदेश में शिक्षा, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल,
[4]. चतुर्वेदी, देवीदत्त (1995), पुस्तकालय और समाज, हिमालय प्रकाशन हाउस, आगरा
[5]. अब आया ई–पुस्तकों का जमाना, न्यूज इन हिन्दी 27 जनवरी,2009
[6]. www.mhrd.gov.in
[7]. www.ugc.ac.in (11th Plan)